Directorate of Distance Education
University of Jammu
Jammu

SELF LEARNING MATERIAL
OF
B.A. SEMESTER-I

SUBJECT : INDIAN MUSIC (MU-101) **Lesson No. 1 to 10**

Course Co-ordinator
DR. STANZIN SHALYA

http:/www.distanceeducationju.in
Printed and Published on behalf of the Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu by the Director, DDE, University of Jammu, Jammu

INDIAN MUSIC

Proof Reading by

DR. USHA

© *Directorate of Distance Education, University of Jammu, 2019*

* All rights reserve. No Part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the DDE, University of Jammu.

* The Script writer shall be responsible for the lesson / script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his/her entire responsbility.

S. K. Printing Press, G. N., Jammu (2018) Qty 50

SYLLABUS

INDIAN MUSIC

Semester - Ist **Marks - 80**

Semester System

SECTION -A 1-4

(i) Prescribed Ragas:-

1. Yaman

2. Durga

(ii) Writing of any one of the chota-khayal (Dhrut) or Razakhani-Gat in Pandit V.N Bhatkhandey Notation system from the prescribed Ragas with few Tanas or todas.

(iii) Writing of detailed definitions of the prescribed Ragas.

(iv) Writing of below mentioned talas with definitions, giving single and double Layakarees in Pandit Y.N. Bhathkhandey Notation system.

(1) Teental (2) Ektal

SECTION -B 5-10

(i) General Musicology:-

1. Sangeet 2. Nad 3. Shruti 4. Saptak

5. Swar 6. That 7. Raga

(ii) Short term Definitions:-

Aroh, Avroh, Pakad, Vadi, Samvadi, Anuvadi, Vivadi, Yarjit Swar

(iii) Biographical sketch of the following Musicians:-

1. Pandit V.N. Bhatkhandey

2. Pandit V.D. Paluskar

INDIAN MUSIC

CONTENT

	TITLE	Page No.
Section-A		
1	Writing of Ragas and talas of the course of study in Notation System.	5-21
1.1	Ragas (a) Yaman (b) Durga	
1.2	Talas:- (a) Teental (b) Ektal	22-26
	General Musicology	
Section-B		
2.1	Definition of the following terms.	27
2.1(a)	Musical terms used in vocal/Instrumental Music	
	(i) Sangeet (ii) Nad (iii) Shruti	27-42
	(iv) Swar (v) Saptak (vi) That (vii) Raga	
(b)	Short term Definitions:-	43-50
	(i) Aroh (ii) Avroh (iii) Pakad (iv) Vadi	
	(v) Samvadi (vi) Anuvadi (vii) Yivadi (viii) Vargit-Swar	
(c)	Biographical sketch of the following Musicians:	
	(i) Pandit V.N Bhatkhandey	
	(ii) Pandit V.D Puluskar	
Section-A		
(d)	Writing of definition of Ragas and talas of the course of study.	58-61

SECTION -A

1. Writing of Ragas and Talas of the course of study in Notation system.

1.1 Ragas a) Rag Yaman b) Rag Durga

Structure:-

1.1.0 Objectives

1.1.1 Frame work of the selested Notes (Ground Plan)

(i) Ascending order (Aroh)

(ii) Descending order (Avroh)

(iii) A phrase of selected Notes (Pakad)

1.1.2 Notation of Rag composition

(Bhat Khandey Notation system)

1.1.2.(a) Vocal composition Rag Building (Block Bandish)

(i) Fast (Chotta) Khayal-with mention of poetic parts of the Raga composed, (sathai-Antra) Notation of Rag composition, tala to which set and elborations like 'Alap' and 'Tan'.

1.1.2.(b) String Instrumental compositions:-

(i) Fast (Razakhani) Gat with mention of tala to which set and elborations like todas and 'Jhala'.

1.1.3 Progress Exercise.

1.1.4 Reference Books for vocal/Instrumental Music

1.1.0 Objectives: After going through this topic the students should be able to:-

(i) Know the Identity of the Raga:-

(ii) Melodic structure of the song composed.

(iii) Rhythmic cycle set in the tempo needed.

(iv) Know the melodic elaborations of the Raga concerned.

1.1 (a) Rag Yaman (राग यमन)

1.1.1 Frame work of the selected (ground plan)

(i) Ascending order (Aroh)

आरोह : ऩि रे ग मे च, ध नि सां

(ii) Descending order (Avroh)

अवरोह :– सं नि ध प, मे ग रे, ऩि रे स

(iii) A phrase of the selected notes पकड (Pakad)

पकड :– ऩि रे ग, प, मे ग, ऩि रे स,

1.1.2 Notation of Rag Yaman यमन

(a) Vocal composition

(i) Fast (chotta-khayal)

Poetic parts - Sathai स्थाई

ऐ री आली पिया बिन सखी

कल ना परत मोहे धरी पल दिन दिन।।

अन्तरा

जब से पिया परदेस गवन कीन्हों

रतिया कटत मोह तारे गिन गिन

Notation राग यमन–तीन ताल (मध्यलय) मात्रा–16

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								निरें	गमें	पध	निंसा	निध	पमे	रे	स
								ऐऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ	आली	
ग	रे	मे	ग	–	–	व	प								
पि	या	बि	न	ऽ	ऽ	सखि									
								ग	में	ग	प	मे	ध	में	प
								क	ल	ना	प	र	त	मो	हे
नी	ध	प	मे	रे	रे	स	स								
ध	री	प	ल	छि	न	दि	न								

अन्तरा

								में	में	प	ध	सां	ऽ	सां	सां
								ज	ब	से	पि	या	ऽ	प	र
नि	रें	गं	रें	नि	रें	सं	सं								
दे	ऽ	श	ग	व	न	की	न्ही								
								पं	गं	रें	स	नि	ध	प	प
								र	ति	या	क	2	त	मो	हे
गमे	पध	निसं	निध	मे	ग	रे	स								
ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ	गि	न	गि	न								

Tansas : (ताने)

1 खाली (0) से

निरे गमे पमे गरे निरे गरे निरे निध गरे गरे

इनिं रेऽ गरे गरे निरे नि़ध

2. सम से

गमे पध निध मेग रेमे गग पमे धप

3. सम से

पमे गमे पध पमे गमे पमे गरे सऽ

4. सम से

नि॒रे गरे नि॒रे गमे गर नि॒रे गमे पध पमे गरे

निरे गमे पध निध पमे गरे

(तिहाह सम से वुगुन में (ए री आली पिया) 3

5. सम से:–

नि॒रे गरे नि॒रे गरे नि॒ध॒ नि॒रे गरे गमे

Progress Exercise:-

Vocal compositions - Ragas yaman:-

1. From which beat (Matra) the 'Sathai' Fast khayal of Rag Yaman starts and which (beat the 'sum' falls)

2. Write down the Ascending order (Aroh) & descending order (Avroh) of the notes of the following Ragas - (a) yaman

3. Name the raga of your course which has all 'Shudh' notes and Madhayam Tivra. Also write its Avroh.

4. Write two 'Tanas' of Eight matras (beat) of Rag yaman.

Write the Notation of the Antra composition of Fast khayal of Rag yaman

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			

1.1.2. (b) String Instrumental composition

1.1 (a) Rag yaman (यमन)

1.1.1. Frame work of the selected notes (general plan)

(i) Ascending order (आरोह)

आरोह :– नि़ रे ग, मे प, ध नि सां

1 Descending order (अवरोह)

अवरोह :– सं नि ध प, मे ग रे नि़ रे सा

(iii) A phase of Rag yaman (Pakad)

पकड :– नि़ रे ग, रे, प मे ग, नि़ रे ग रे, नि़ रे सा।

1.1.2 Notation of Rag yaman (यमन)

(i) Fast (Raga khani) Gat राग यमन त्रिताल मात्रा = 16

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
								प	मेमे	गग	रेरे	नि़	रेरे	ग	रे
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	ऽ	ग	रे	नि़	रेरे	स	स								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								प	प़प़	स	स	नि़	रेरे	स	स
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नि़	रेर	गग	रेरे	नि़	रेरे	स	स								
दां	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा								

अन्तरा

		ग मेमे पप धध	मे धध नि नि
		दा दिर दिर दिर	दा दिर रा रा
से ऽ सं सं	नि़ रेरें सं सं		
दा ऽ दा श	हा दिर रा रा		
		नि रेरें गग रेरें	नि रेरे सं सं
		दा दिर दिर दिर	दा दिर दा रा
निनि धध पप मेमे	ग – ग रे–रे स		
दिर दिर दिर दिर	दां र दा ऽ र दा		

Elaborations

Todas (तोडे)

1 सम से

निरे गमे धनि सरे संनि धप मेग रेस

2. सम से

पमे गरे नि़ध नि़रे गरे गरे निरे सऽ

(नि़रे गेर गऽ)^3

3. सम से

गरे गरे नि़रे गमे पमे पमे गमे पध

तिहाई खाली (0) से (पमे गरे गऽ)^3

4. सम से

नि़रे गरे नि़रे सऽ मेध निध मेध पऽ

निरें गैरं संनि धप मेध पमे गरे सऽ

(तिहांह सम से :– (गरे गरे नि़रे गरे गऽ गऽ)^{3}

Jhala :- झाला:–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								पं	मेमे	गग	रेरे	नि़	रेरे	ग	रे
ग	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	नि	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
स	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	नि	ऽ	ऽ	ऽ	ध़	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	दां	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ
प	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ								
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	प	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा								
								मे	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	प	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ								
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा								
								ग	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा								

तिहाई (पमे गरे गऽ)^{9}

दुगुन लय में

1.1 (b) Rag Durga (दुर्गा)

1.1.1 Frame work of the selected notes (ground plan)

i) Ascending order (Aroh)

आरोह :– स रे म प ध सं

ii) Descending order (Avroh)

अवरोह :– सां ध प म रे स रे ध़ स

iii) A phrase of Rag Durga (दुर्गा)

पकड़:– रे म प ध, म रे, स रे, ध़ सा

1.1.2 Notation of Rag Durga (दुर्गा)

(a) Vocal composition.

(i) Fast (Chhota Khayal)

Poetic Parts

Sathai स्थाई

खेलत श्याम सुन्दर संग होरी

अबिर गुलाल की मरि यरि झोरी।।

Antra / अन्तरा

हिल मिल फाग चरस्पर खैल

गोविन के तन पर रंग डारी।।

Notation राग दुर्गा – त्रिताल मात्रा=16

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								प	प	प	प	ध	म	प	ध
म	म	रे	स	ध	रे	स	स	खे	ऽ	ल	त	श्या	ऽ	म	सुं
द	र	सं	ग	हो	ऽ	री	ऽ								
								ध	स	रे	म	रे	म	रे	स
								अ	बि	र	गु	ला	ऽ	ल	की

म	प	ध	सं	ध	सो	धप	मप								
भ	रि	भ	रि	झो	ऽ	रीऽ	ऽऽ								
अन्तरा															
								म	म	प	ध	सं	ध	सां	सां
ध	सं	रे	स	ध	प	मध	प	हि	ल	मि	ल	फा	ऽ	ग	प
र	स	व	र	खे	ऽ	लेऽ	ऽ								
								प	प	प	प	ध	म	प	ध
सं	सं	ध	प	मप	धप	भरे	स	गो	ऽ	पि	न	के	ऽ	त	न
प	र	रं	ग	अऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽ								

Raga Elaborations:-

Alap आलाप

i) खाली (0) से :–

0 3 × 2

स धं स रे म रे म प रे रे प ध म प ध म

ii) खाली (0) से :–

0 3 × 2

ध म प ध ध सं रें सं प म प ध म रे स रे

Tanas (ताने)

1 खाली (0) से

सरे मम रेस धस रेम रेम रेस रेम पध पम

रेम पम रेस धरे सस मप

2. सम से

मम पध मप रेम पध मप धसं धप

3. सम (α) से

मप मम रेस मम रेरे पप मम रेरे

4. सम (α) से

सरे मम रेम पप मप धध पध संसं

5. सम (α) से

पप मप रेम पध मप धप मम रेस धध पध मप

रेम पध मप संस धप

(तिहाई सम से दुगुन में (खेलत श्याम सुन्दर संग)[3]

1.1.3 Progress Exercise

Vocal compositions:- Yaman, Ragas, Durga

1. From which beat (Matra) the Sathai Fast khayal of Rag yaman starts and on which 'beat' the "sum" falls?

2. From which note the 'Sathai' of Fast-khayal of Rag Durga starts and on which note the "sum" falls?

3. Write down the Pakad of the following Raga (a) Yaman (b) Durga

4. Write down the Ascending order (Aroh) & descending order (Avroh) of the following notes of the following Ragas (a) Yaman (b) Durga

5. Name the Ragas of your course which has all 'shudh; notes and madhayam Tivra. Also write its Avroh.

6. Write the Notation of the 'Sathai' of Raga Yaman (Fast khayal)

×								0							
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

7. Write two 'Tans' of eight Matras (beat) each of the following Ragas:-

i) Rag yaman ii) Rag Durga

b) String Instrumental composition :

1.1 (a) Rag Durga (दुर्गा)

1.1.1 Frame work of the selected notes (Ground Plan)

i) Ascending order (आरोह)

आरोह :– स रे म प ध सां

ii) Descending order (अवरोह)

अवरोह :– सां ध प म रे स रे ध़ सा।

iii) A phrase of Rag Durga (दुर्गा)

पकड़:– रे म प ध, म रे, स रे ध सा

1.1.2 Notation of Rag Durga (दुर्गा)

(i) Fast (Razakhani) Gat: राग दुर्गा

Set to Tala :- त्रिताल मात्रा 16

स्पयाह

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
												ध	मम	प	ध
सं	ऽ	द	मम	प	ध	रे	स	स	रेरे	प	प	दा	दिर	दा	रा
दा	ऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा				
												स	रेरे	मम	रेरे
प	म	ध	प	सं	धध	मम	रेरे	स	रे	ध़ध़	स	दा	दिर	दिर	दिर
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दा				

अन्तरा

			रे मम प ध
सं संसं सं सं	ध सस रें मं	रें संसं ध प	दा दिर दा रा
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	
			सं रेरें ध सं
म रेरे प प	ध पप म रे	स रे ध़ स	दा दिर दा रा
दा दिर दा रा	दा दिर रा रा	दा रा दा रा	

Elaborations:-

Todas (तोड़े)

1. सम (α) से

   सरें धसं पध मप धम पध मरे धसं

   तिहार्इ, खाली से दुगुन में (पंध मप संऽ)^3

2. सम से

   सरे मम रेम पध मम रेम रेप मम (गत शरू से)

3. सम से

   सरे मप मऽ मऽ रेम पध पऽ पऽ

   तिहार्इ खाली (0) से दुगुन में (पध मप संऽ)^3

4. सम से

   रसें धसं धप धऽ संध पध पम पऽ

   धम रेप मरे सऽ धस रेम पध मप

   तिहार्इ सम से (सरे मप धम पध संऽ संऽ)^3

Jhala (झाला) सम से:–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई द्रुतलय में															
								स	रे	म	रे	स	ध	स	रे
म	ऽ	ऽ	रे	स	रे	ऽ	म								
								प	ध	प	म	रे	म	प	प
रे	ऽ	ऽ	स	ध	ऽ	रे	ऽ	म	म	प	ध	ध	म	प	ध
मिजराब के बोल दा		रा		रा रा Thought out											
स	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
म	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
म	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
स	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
प	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
स	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा
रे	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा	दा	रा	रा	रा

तिहाई– सम से:– (धम पध सऽ)9

1.1.2 Progress Exercise String Instruments Compositions:

1. From which beat (Matra) the Sathai of Razakhani-Gat of Rag ‘yaman’ begins and on which beat the sum falls?

2. From which note the ‘Sathai’ of the Razakhani Gat of Rag ‘Durga’ begins and on which note the sum falls?

3. Write down the typical phrase of Notes (Pakad) of the following Ragas :- (a) Yaman (b) Durga

4. Write down the Ascending order (Aroh) & descending order (Avroh) of the notes of Rag (a) Yaman (b) Durga

5. Name the Ragas of your course which have 'MA' Madhayam Tivra Notes?

6. Name the Ragas of your course which have ‘Shudha’ Notes also wrote its ‘Aroh’.

7. Write the Notation of the ‘Sathai’ of Raga Fast Gat (Razakhani) Rag yaman.

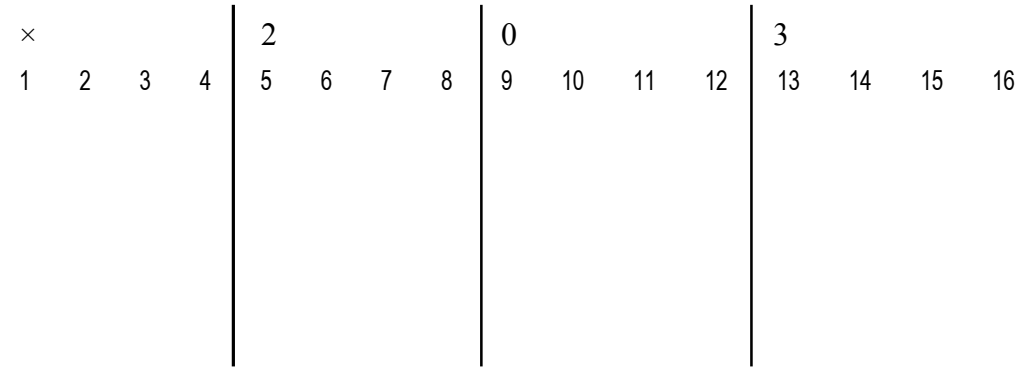

8. From which beat the ‘toda’ of eight Matras followed by (Tehai) starts in "Razakhani - Gat". Write one such ‘toda’ each in the following Ragas:- (a) Yaman (b) Durga

1.1.2 Books to be studied for vocal Instrumental Music.

(i) Rag Parichey by Harish Shrivastava

Vol. I and II (Pub) sangeet sadan prakashan 88., South Malaka Allahabad

(ii) Sangeet Shastra Darpan by Smt. Shanti Goverdhan Sangeet Karyalaya Harthras vol I &II.

iii) Kramik Pustak Malika by pt. V.N Bhatkhandey vol I & II.

iv) Sitar vadan by Prof. Satish Chander vol I & II.

v) Sitar Shiksha by Bishamber Nath Bhat

vi) Vadaya Shastra by Harish Chander Shrivastava (Pub-Sangeet Sadan Prakashan 88 South Malaka- Allahabad.

vii) Sangeet Boad by Dr. Sharash Chander Shrivar Pranjapay, Pub: Sangeet Karyalaya Hatheas (U.P)

1. Writing Talas of the course of study in Notation system.

2. Talas (a) Teental (b) Ektal

Structure:-

1.2.0 Objectives

1.2.1 Frame work of beats / Introduction.

(i) Total number of beats in a tala cycle.

(ii) Division of beats in the 'tala'.

(iii) Order of beats in each Division.

(iv) Location of talas and khalis.

1.2.2 Notation of the tala composition / Rhythamic pattern.

(i) Single tempo/Basic rhythm (ठाहलय)

(ii) Double tempo (दुगुनलय)

1.2.3 Progress Exercise

1.2.4 Books to be studied

1.2.0 Objective:-

After going through this topic the students should

(i) know, how to identify the talas

(ii) know the rhythmic pattern of the tala cycle.

(iii) understand how to write the layakaries of the tala.

(iv) know the utility of tala in Melodies.

1.2 (a) Teental (तीनताल)

1.2.1 Introduction /Frame work of beats:-

इस ताल में 16 मात्राएं होती है 4–4 मात्रा के चार भाग होते हैं। पहली मात्रा (सम) पाँचवी और तेहरवी मात्रा पर पडती है। तथा नौवी मात्रा पर खाली (0) आती है।

1.2.3 Notation तीन ताल–मात्रा=16

i) Single Tempo/ Basic rhythm (ठाहलय)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल,	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	ध	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	ध
ताल चिह	×				2				0				3			

(ii) Double Tempo (दुगुन लय)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिधा	धधिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
ताल चिंह	×				2			

मात्रा	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धाधिं	धिधा	धधि	धिंधा	धातिं	तिता	ताधिं	धिंधा
ताल चिंह	0				3			

(b) Ek tal (एक ताल)

1.2.0 Introduction / Fame works of beats

इस ताल में 12 मात्राएं होती है। 2–2 मात्राओं के 6 भाग होते हैं। पहली मात्रा (सम) पांचवी, नौवी और ग्यारहवीं मात्रा पर ताली पड़ती है। तथा तीसरी और सातवीं मात्रा पर खाली (0) आती है।

1.2.1 Notation एक ताल–मात्रा

(i) Single Tempo/ Basic Rhythm (ठाहलय)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिं	धि	धागे	तिरकिट	तू	ता	क	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
ताल चिंह	×		0		2		0		3		4	

ii) Double Tempo

मात्रा	1		2			3	4		5			6
बोल	धिंधि		धागे	तिरकिट		तूना	कता		धागे	तिरकिट		धिना
ताल चिंह	0						2		3			
मात्रा	7		8			9	10		11			12
बोल	धिंधि		धागे	तिरकिट		तूना	कता		धागे	तिरकिट		धिना
ताल चिंह	0					2			3			

1.2.2 Progress Exercise:-

1. What is the total No. of beats in the following talas:- Teental, Ektal?
2. Write symbols of 'sum' and khali in the tala cycle.
3. on which beat the 'sum' and 'khalis' falls in the following talas cycles Ektal, Teental.
4. How many Divisions each of the following talas have? Also mention the order of beats in each Division. Ektal-Teental

1.2.3 Books to be studied for rhythmic pattern:-

i) Tala Malika by Dr. Rajeev Sharma

ii) Tabla vadan by Grish vastava (vol-I)

iii) Tal Parichey by Grish Shri Vastava (vol-I)

iv) Sangeet Shastra Darpan by Smt. Shanti Goverdhan (Pup Ratnakar Pathak 8-8 Mahajan Tola Allahabad (vol.I)

v) Sangeet Sharad by Basant (Pup Sangeet Karyalaya Hatheas (20410-UP)

vi) Prabhakar Preshnotar by Jagdish Narayan Pathak Pathak Pub. Allahabad

vii) Talkosh by Grish Chander Shrivastava Pup Sangeet Prakashan South Malaka Allahabad specimen of the Questions generally set from Section-I

Q1. Write the Notation of any Fast (Dhrut) Composition of Razakhani - Gat in any one of the following Ragas: a) Rag yaman b) Rag Durga

OR

Write Notation of chotta-khayal or Razakhani-Gat in any one of your course with at least two Tanas or todas of eight beats (Matras) with Tehai.

Q2. Write in Notation any two different layakaries of the following talas:- (Teental, Ektal)

OR

write the Notation of any two of the following reducing them also to two different layakaries Ektal, Teental.

OR

Write the Notation of any two Talas of your course, which have equal number of beats. Also reduce them to two layakaries.

SECTION - B

General Musicology **Lesson No. : 5-10**

2.1 Definition of the following terms:-

2.1 (a) Musical terms used in vocal Instrumental Music.

(i) Sangeet (ii) Nad (iii) Shruti (iv) Swar

(v) Saptak (vi) that (vii) Raga

ii) Short Term Definitions:-

i) Aroh (ii) Avroh (iii) Pakad (iv) Vadi

v) Samvadi (vi) Anuvadi (vii) Vivadi (viii) Varjit Swar

Structure:-

2.1.0 Objectives

2.1.1 Explanation of the term

2.1.2 Definition of the term

2.1.3 Characteristics

2.1.4 Importance

2.1.5 Progress Exercise

2.1.6 Books to be studied

2.1.0 Objectives

After going through this section the student should be able to :-

i) know the technical concept of the term

ii) know the meaning and definition of the term.

iii) utility of the term in the melodies.

2.1.(i) Sangeet (संगीत) :-

2.1.1. Explanation of the term (व्याख्या)

संगीत मानव समाज की एक कला की उपलब्धि है। मन के सक्ष्म भावों के नाद के द्वारा व्यक्त करने की कला संगीत है। अर्थात नाद के भिन्ना न गीत है, न स्वर है और ना ही राग है। नाद सम्पूर्णा जगत में समाया है।

संगीत एक ऐसी कला है जिससे गायन तथा वादन, नृत्य तीन कलाए मिलकर संगीत कहलाते हैं। प्राचीन समय में इन तीन कलाओं का प्रयोग एक साथ हुआ था। संगीत का ललित कलाओं में एक प्रमुख स्थान रहा है। भारत में भक्तिया उपासन के जो भिन्न–भिान मार्ग रहे, उन सब में सगीत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था

Definition of the term:- परिभाषा

संगीत संस्कृत भाषा का शब्द है। इस भाषा के दो 'शब्दों का मिलन है। प्रथम शब्द सम है व द्वितीय गीत है।

"Music is defined as the art of singing, Dancing, playing on instruments".

संगीत का सम्बन्ध देवी देवताओं से जुडा है। संगीत की शिक्षा सर्वप्रथम ब्रह्म जी ने शिव को दी और शिव ने इस ज्ञान एंव कला की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को दिया। सरस्वती ने विद्या नारद को दी। संगीत की प्रसंश के बारे में पं॰ जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली के लाल किले पर स्वतन्त्रता दिवस का समारोह मनाते समय कहा था।

The way of relaxation might differ the countries, but there could be no dispute over the fact the relation of high music was common every where. Music was not only interesting but also educative. Music poetry were necessary for the life of the human being.

Ref. संगीत कौमुदी लेखन विक्रमादित्य पृष्ठ नं. 54 संगीत की प्रशांसा हमारे भूत पूर्प राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी की है। उनका कहना है कि संगीत हमारे जीवन में महत्व की चीज़ है।

Music occupies an important place in one lives from time immemorial. We have learnt to appreciate music and to cocintit among the formost achievement of man, (वही, Ref)

संगीत उत्तम कला है। संगीत मनुष्य के लिए अति सुखदाई हे। जिस प्रकार काव्य चित्रकारी साहित्य आदि से सुख प्राप्त करता है। उसी प्रकार संगीत में उस अति आनन्द प्राप्ति होती है। क्योंकि संगीत लोगो के लिए प्रथवी व स्वर्ग का सुनहरी रास्ता Golden Path प्रशात्त करता है। मौसकी शब्द संगीत का र्पयाय वाचक शब्द है। यह अरबी भाषा का मौसकी शब्द का रूपान्तर है।

2.1 (ii) Nad

2.1.1. Explanation of the term:-

नकारं प्राणानामांन दकारमनंल विदुः।

जातः दाणाग्नि संयोगात्तेन नादोऽमिधीपते।। (संगीत रलाकर)

अर्थात 'नकार' दानी प्राण (वायु) वाचक तथा 'दकार' अग्नि वाचक है। अतः जो वायु और अग्नि के सम्बन्ध (योग) से उत्पन्न होती है उसी को 'नाद' कहा जाता है

2.1.2 Definition (परिभाषा):–

तानपूरे अथावा सितार के खिचे हुए तार को आघात करने से तार कम्पन्न करता है और ध्वनि उत्पन्न होती है। संगीत में नियमित और स्थिर कम्पन (आदोलन) द्वारा उत्पन्न ध्वनि का उपयोग होता है, उसे नाद कहा जाता है। जब किसी ध्वनि की कम्पन कुछ समय तक चलती रहती है तो उसे स्थिर आंन्दोलन और जब उसी ध्वनि की कम्पंन समान गति वाली होती है, तो उससे नियमित आन्दोलन कहते है।

शोर–गुल कोलाहल आदि ध्वनियों में अनियमित और अस्थिर आंन्दोलन होने के कारण संगीत में इनका प्रयोग नहीं होता। संगीत–पयोगी ध्वनि को नाद कहते है।

Tyes of nad नाद के दो भेद हैः– (i) अनाहत नाद

(ii) आहत नाद

अनाहत नाद : जो नाद केवल ज्ञान से जाना जाता है जिसके पैदा होने का कोई खास कारण न हो, अर्थात जो मिन्ना संघर्ष सा स्पर्श के पैदा हो जाए उसे अनाहत नाद कहते है। जैसे दोनो कान बन्द करने पर भी अनुभव करके देखा जाय तो 'धन्नु' या साय–साय की आवाज सुनाई देती है।

इसी अनाहत नाद की उपासना, हमारे प्राचीन ऋषि, मुनि करते थे। इसलिए यह संगीत पयोगी भी नहीं है अर्थात संगीत से अनाहत नाद का कोई सम्बन्ध नहीं है।

आहत नाद :– जो कानों से सुनाई देता है। दो वस्तुओं के संघर्ष था रगड से पैदा होता है, उसे आत नाद कहा जाता है। इस नाद का संगीत से विशेष सम्बन्ध है। यथपि अनाहत नाद को मुक्तिदाता माना गया है। किन्तु आहत नाद को भी भवसागर से पार लगाने वाला बनाकर संगीत दर्पण में दामोदर पंडित ने लिखा है।

स नाद सवाहतो लोके रंजको भवमंजक।

श्रुत्यादि द्वारत स्तस्मात्तदु पृक्तिनिरूप्यते।।

अर्थात आहत नाद व्यवहार में श्रुति इत्यादि। स्वर ग्राम, मूंछना से रंजक बनकर भव–मंजक भी बन सकता है।

Characteristics of Nad :-

नाद के सम्बन्ध में तीन बातों की आवश्यकता होती है।

(i) नाद का छोटा बडापन (Magnitude) जो आवाज समीप हो और धीरे धीरे सुनाई पडे उसे छोटा नाद कहेगे, और जो आवाज दूर से आ रही हो तथा जोर जोर से सुनाई पड़े, उसे बड़ा नाद कहेगे। उदाहरण के तौर पर किसी बाजार की भीड़ में या मेले में कोई जोर से चिल्ला रहा है कोई धीरे बोल रहा है, किसी ओर बच्चे रो रहे है कोई हंस रहा है, तो इस क्रियाओं के द्वारा वायु में जो कम्पन्न होगी वे अनियमित ही तो होगे और यह अनियमित कम्पन्न शोरगुल ही कहलायेगा। उसे ही संगीतपयोगी नाद कहेगे।

निम्नलिखित चित्रों को देखिएः–

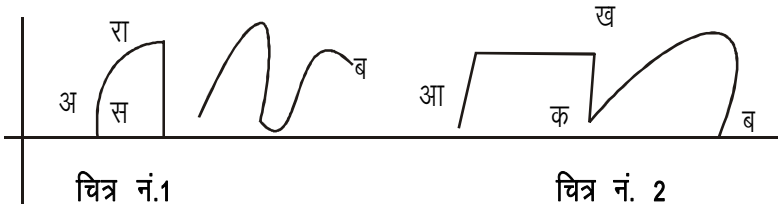

चित्र नं.1 चित्र नं. 2

चित्र नं.1 में तरंग 'स–द; की चौड़ाई चित्र नं. 2 की 'क–ख की चौड़ाई से कम है इसी कारण 'स–द; तरंग का बाद 'क–ख' तरंग से छोटा होगा।

दोनो चित्रों में तरंगों की लम्बाई अर्थात 'आ–ब समान है। परन्तु चित्र नं01 की ध्वनि पास तक ही सुनाइ देगी और चित्र नं.2 की ध्वनि दूर तक विज्ञान की भाषा में इसे योा कह सकते है कि जब धीरे से उत्पन्न ध्वनि तरंग की चौड़ाई कम होती है तो नाद छोटा होता है, किन्तु जब जोर से उत्पन्न ध्वनि तरंग की चौड़ाई अधिकत होती है तो वही नाद बड़ा हो जाता है।

(ii) नाद की जाति (timber) नाद की जाति से यह ज्ञात होता है कि जो आवाज आ रही हे वह किसी मनुष्य की है या किसी बाजे से निकल रही है उदाहरणतय एक नाद हारमोनियम? सारगी, सितार, बेला इत्यादि से प्रकट हो रहा हे, और एक नाद किसी गवैये से प्रकट के गले से प्रकट हो रहा है, तो हम नाद प्रकट होने की उस कृिया कसे को देखे, भिन ही यह बता देगे कि यह नाद किसी साज का है या किसी मनुष्य का हे इस क्रिया को पहचानना नाद की जाति कहलाती है। वैज्ञानिकों का कथन हे कि कोई भी नाद अकेला नहीं उत्पन्न होता। उसके साथ कुछ अन्य नाद भी उत्पन्न हुआ करते है जिन्हें केवल अनुभवी कान सुन सकते है।

नाद का ऊँचाः–नीचा पन (pitch) प्रत्येक नाद दूसरे से ऊँचा अथवा नीचा होता है। जैसे 'स' से ऊँचा 'रे' तथा 'रे' से नीचा सा आता है। नाद का ऊचया नीचापन नाद से उत्पन्न होने वाली एक सैकण्ड की आदोलन संख्या पर र्निभर होता है।

एक सैकण्ड में नाद की आन्दोलन संख्या जितनी अधिक होगी, नाद उतना ही ऊंचा होगा तथा एक सैकण्ड में बाद की आन्दोलन संख्या जितनी कम होगी नाद उतना ही नीचा होगा। उदाहरणतः 'पा की आकोलन संख्या 'ग' से अधिक होगी और 'स' की 'ग' है से कम क्योंकि 'स' से ऊँचा 'ग' और 'ग' से ऊँचा 'प' वायु से अत्पन्न तरंगों का साधारण रूप इस प्रकार होता है।

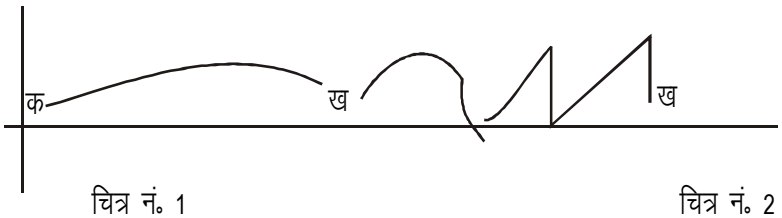

चित्र नं॰ 1 चित्र नं॰ 2

240-Vibrations/ Sec. 480-Vibration

(स) मध्य सप्तक (स) तार सप्तक

चित्र नं॰ 2 की आन्दोलन संख्या चित्र नं॰ 1 की आन्दोलन संख्या से दुगनी है। इस प्रकार यदि हम नं॰1 चित्र की ध्वनि को मध्य सप्तक का षडज मान ले तो चित्र नं॰ 2 में दिखाई गईध्वनि तार सप्तक का षउज होगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि ज्यौ–ज्यौ आन्दोलन संख्या बढती है 'नाद' ऊचा होता जाता है। इस बात की विज्ञान की भाषा में यू कहेंगे कि किसी ध्वनि तरंग की लम्बाई बठते जाने पर 'नाद' नीचा तथा कम हो जाने पर 'नाद' ऊंचा होता है दूसरी बात यह है कि ज्यौ–ज्यौ ध्वनि उत्पन्न करने वाली तार की लम्बाई कम करते जायेगे त्यौ त्यौ नाद ऊँचा होता जायेगा। तथा तार की लम्बाई बठने पर 'नाद' ऊंचा होगा।

2.1. (iii) Shruti (श्रुति)

2.1.2 Explanation of the term :- (व्याख्या):–

रेजकता के आधार पर संगीतपयोगी नाद या ध्वनि जो कान से सुनाई दे, जो रजंक हो, तथा कान मन व आत्मा को सुख प्रदान करे, आनन्द करे वही श्रुति है जो सुनाई है, वही श्रुति है।

श्रवणेद्रिय द्वारा ग्रहण किए जाने के कारण ही ध्वनि को श्रुति कहते है। अर्थात जिस ध्वनि का गायन में नित्य प्रयोग किया जा सके, जो एक दूसरे से पृथक पहचानी जा सके, वही संगीत की श्रुति है। श्रुति व स्वर में भेद उतना ही है जितना साँप और उसकी कुण्डली में।

Definition परिभाषाः–

विद्वानों के अनुमानों से सभी विद्वानश्रुति परिभाषा के सम्बन्ध में जो सुनाई दे वही श्रुति है।

शास्त्रकारों ने एक सप्तक में कुल 22 श्रुतिया मानी है इन श्रुतिओं के बीच इतना 'अन्तर माना है कि 23 वी श्रुति पहली श्रुति से ठीक दुगनी ऊचाई पर रहे क्योंकि 23 वी श्रुति से एक अलग सप्तक का आभास होता है। वास्तव में सुनी जाने वाली अनेक ध्वनिया ऐसी होती है, जिसमें रंजकता नहीं होती आर्कषण नहीं होता है, और मधुरता रहती है। ऐसी ध्वनिया संगीतपयोगी नहीं होती, इसलिए कलाकार केवल उसी श्रुति की उपासना करता है जिसमें रजकता हो जो स्पष्रूपेण सुनी पहचानी जाये। श्रुति भारतीय स्वरसतक का मुलाधार है। श्रुति भारतीय संगीत की आत्मा है। सभी प्रकार की चिंताओं और दुखों से मोक्ष प्राप्त होता है।

2.1 (iv) Swar (स्वर)

2.1.1 Explanation of the Term : - (व्याख्या)

स्वर :– संगीत का मूलभूत उपादान स्वर है। संगीत चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य स्वर पर आधारित होता है। इसको पाश्चात्य संगीत में 'नाद' कहते है। स्वरों के विभिन्न समुदायों से संगीत का र्निमान होता है। स्वर वह नाद है जो रंजक हो जिसका अन्य नादों के बीच विशेष स्थान हो। स्वर कहलाने के लिए उसका अन्य नादों या ध्वनियों से कोई संम्बध होना आवश्यक है। कोई ध्वनि ऋषम या गाधार या मध्यम तब कहलायेगी जब षउज की सत्ता हमारे मन में स्थिर हो जाय। हमारे मूल भूत स्वर का षड़ज या 'स' कहते है। संगीत में समय कोई न कोई मूल भूत स्वर कायम करना पड़ता है। वह चाहे जिस ऊँचाई का हो। वह स्वर प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न भिन्न हो सकता है। तथापि उसको पहले स्थिर करना जरूरी है। इसके आधार पर हम श्लोक कहते है, गीत गाते है, धनु बनाते है, नृत्य के घुंधरू भी संवारते है।

इस स्वर को स्थायी या 'स्थिर' रहने वाला स्वर कहते है। संगीत का अटूट सम्बन्ध ध्वनि अथवा आवाज़ से होता है। परन्तु ध्वनियां दो प्रकार की होती है एक मधुर दिलकाश दूसरी कर्कश जो कानों को खटकती है। स्वर श्रतियों से बनते है। अर्थात इसका अटूट सम्बंध श्रुतियों से है। एक सप्तक में 22 श्रुतियों की चुनी गई सात श्रुतिया जो एक दूसरे से कुछ अन्तर पर है, तथा सुनने में जो मधुर लगे स्वर कहलाती है। कुल सात स्वर जिसका स्वरूप इस प्रकार है, पउज, मृषम, गाधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। 22 श्रुतियों को मुख्य सात स्वरों में बाँटा गया है।

Kinds of Swars:-

स्वर दो प्रकार के होते है। शुद्ध Sharp, (ii) विकृत (Flat)

(i) शुद्ध स्वर (Sharp) शुद्ध स्वर वह कहलाते है जो अपने स्वाभाविक या मूल भूत स्थान पर स्थित है। वर्तमान भारतीय संगीत में स और प सदैव अचल, या शुद्ध माने जाते है।

(ii) विकृत (Soft) Flat स्वरः– विकृत स्वर व स्वर कहलाते है जो अपने स्थान से हट जाते है चाहे वह नीचे की दिशा से हो या उपर की। सात स्वरों में रे, गा, म, ध, नि के स्वरों के दो रूप होते है रे, ग, ध, नि, यानि विकृत स्थिति में वह अपना स्थान नीचे को बदलते है। और कोमल स्वर कहलाते है। उदाहरण के तौर पर र और घ इस प्रकार कोमल लिखने की विधि मत्थम स्वर जब विकृत होता है तब वह अपना स्थान ऊपर की ओर बदलती है व तीव्र कहलाता है, लिखने की विधि मध्यम तीव्र (में) इस तरह लिखा जायेगा।

2.1 (v) Saptak (सप्तक) Octave

2.1.1 Explanation of the Term (व्याख्या)

सप्तक का अर्थ है सात क्योंकि एक स्थान पर 7 शुद्ध स्वर निवास करते है, अतः इसका नाम 'सप्तक' हुआ। नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वर से सप्तक की उत्पत्ति होती है। सात स्वरों के समूहों को जब एक क्रम में कहा अथवा लिखा जाता है, तब वह सप्तक कहलाता है।

सप्तक में सातों स्वर क्रमानुसार होते है। उदाहरण के लिए स रे ग म प ध नि यह एक सप्तक है। संगीतोपयोगी नाद अर्थात मधुर ध्वनि की उँचाई व निचाही के आधार पर उसके मन्द, मध्य, तार तीन भेद माने जाते है। इन तीन नाद स्थानों में एक एक सप्तक मान कर क्रमशः मन्द, मध्य और तार सप्तक कहलाते है।

Definition of the term:-

परिभाषाः– एक सप्तक 'स' स्वर से 'नि' स्वर तक होता है। जब इस 'नि' स्वर के बाद 'स' आता है तो पहले 'स' से दुगुना ऊँचा होता है। इस रूप में दूसरा नया सप्तक आरम्भ होता है। इस नये सप्तक के सभी स्वर पहले सप्तक के स्वरों से दुगने ऊँचे होते है परन्तु विद्वानों ने municologist ने केवल तीन सप्तक माने है। (i) मन्द्र सप्तक (ii) मध्य सप्तक (iii) तार सप्तक इनको आधार स्थान कहकर भी पुकारते है। सबसे प्रथम मन्द्र सप्तक आता है। जिन सप्तक के स्वरों की आवाज़ सबसे नीची हो अथवा मध्य सप्तक से आधी हो उससे मन्द्र सप्तक मन्द्र सप्तक कहा जाता है। मातखण्डे पद्वति में इसके स्वरों की पहचान यह है स रे ग म प ध नि मन्द सप्तक के स्वरों को बोलने पर कण्ठ पर और तार सप्तक के स्वरों का व्यवहार करने पर या गाने में हृदय पर, मध्य सप्तक के स्वरों को बोलने में कण्ठ पर और तार सप्तक के स्वरों का व्यवहार करने पर ताल पर जोर लगाना पड़ता है।

(i) मध्य सप्तक Middle octave:- मध्य का अर्थ है वीच का यानि न अधिक व नीचा न अधिक ऊँचा मन्द्र सप्तक से दुगनी आवाज होने पर मध्य सप्तक कहलाता है। इसके स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं होता है। स रे ग म प ध नि (मध्य सप्तक) गायन अथवा वादन का अधिकाश भाग जिस सप्तक में होता है उससे मध्य सप्तक कहते है। सप्तक से थाट व थाट से रागों की रचना मानी गई है। मध्य सप्तक के स्वर अपने पिछले सप्तक अर्थात मन्द्र सप्तक के स्वरों से दुगनी उँचाई पर होते है।

(ii) तार सप्तक (Higher octave) मध्य सप्तक, से दुगुनी ऊँची आवाज होने पर तार सप्तक कहलाता है। इस सप्तक के स्वरों को उच्चारण करते हुये हमारे मस्तक व तालू पर लगाव पड़ता है। इसे उच्च सप्तक भी कहते है। इसकी पहचान के लिए स्वरों के उपर एक बिन्दू लगा दिया जाता है। जैसे– सं रें गें मं पं धं निं (तार सप्तक)

2.1 (viii) that (थाट) scale:-

2.1.1. Explanation of the term (व्याख्या)

'मेल' (थाट) स्वरों के उस समुह को कहते है जिससे राग उत्पन्न हो सके। नाद से स्वर स्वरों से सप्तक ओर सप्तक से थाट तैयार होते है। एक सप्तक से शुद्ध विकृत कोमल तीव्र मिलाकर कुल 12 स्वर होते है। इन्हीं 12 स्वरों की

सहायता से थाट तैयार होते है। थाट को ही संस्कृत में 'मेल' के नाम से पुकारा जाता है। संगीत में नाद से श्रुति से स्वर तथा स्वर से सप्तक की उत्पत्ति होती है।

Defination (परिभाषा) सप्तक के सातो स्वरों के क्रमानुसार समुह को थाट कहते है।

थाट में सप्तक के शुद्ध तथा विकृत स्वरों में से प्रत्येक स्वर का कोई न कोई रूप अवश्य होना चाहिए, तथा उसमें अनेक राग उत्पन्न होने की शक्ति भी होनी चाहिए। कोई राग किस थाट ने सम्बन्ध रखता है, अर्थात उसमें कोन से शुद्ध कोमल और तीव्र स्वर लगते है। यह थाट ही सूचित करता है। इसलिए आधुनिक राग का प्रथम लक्षण थाट माना गया है।

Rules relating to the thtas or scales:-

i) थाट के नियमः–

थाट हमेशा सम्पूर्ण जाति का अर्थात सातों स्वर वाला होना चाहिए। उसके स्वर शुद्ध हो अथवा विकृत।

ii) थाट के सातों स्वर क्रमःनुसार होने चाहिए। अर्थात सा के बाद रे अवश्य आना चाहिए। ग नहीं

iii) थाट से राग का जन्म माना गया है।

iv) थाट गाये नहीं जाते, इसलिए थाट में रंजकता वादी सम्वादी पकड गायन समय आदि आवश्यक नहीं है।

v) उत्तरी संगीत पद्धति में थाटो की संख्या 10 मानी गई है। उनके नाम हैः–

बिलावल, खमाज, कल्याण, काफी, आसावरी, मैख, मैखी, पूवी भरवा, और तोडी, ये जनक थाट कहलाते है।

vi) थाट मैं आरोह अवरोह दोनों का होना आवश्यक नहीं है। बल्कि इसमें केवल आरोह ही होता है।

vii) थाट में एक ही स्वर के दो रूप (कोमल व तीव्र) साथ साथ भी आ सकते है।

The Accepted No of thatas (Scales):-

थाटो की संख्या :– इन्हीं 10 थाटो के अन्तरगत मातखण्डे जी ने हिन्दोस्तानी रागों को बाधं दिया है।

1. बिलावल :– स रे ग म प ध नि (सबस्वर शुद्ध)
2. यमन :– स रे ग मे प ध नि (में तीव्र)
3. खमाज :– स रे ग म प ध $\bar{\text{नि}}$ (नि् कोमल)
4. मारवा :– स रे् ग मे प ध नि (रे् कोमल)
5. काफीः– स रे ग म प ध नि (ग् नि् कोमल)

6. भैरवः– स रे॒ ग म प ध॒ नि (रे॒ ध॒ कोमल)

7. पूर्वीः– स रे॒ ग मे प ध नि (रे॒ ध॒ कोमल)

8. आसावरी :– स रे ग म प ध नि (ग॒ ध॒ नि॒ कोमल)

9. तोड़ी :– स रे ग में प ध नि (रे॒ ग॒ ध॒ कोमल)

10. भैरवीः– स रे॒ ग म प ध॒ नि (रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ कोमल)

2.1 (ix) Rag (राग)

2.1.1 Explanation of the term : (व्याख्या)

राग शब्द मूलता संस्कृत भाषा का है। जिसका उदगम 'रज' धातु से हुआ है। इसकी उत्पत्ति से स्पष्ट होता है कि रजकता से ही राग है रंज धातु का प्रयोग रंगने के अर्थ में बताया गया है। अर्थात राग का अर्थ है हमारे मन को अपने रंग में रंग लेना। और यही राग का अर्थ है। राग शब्द का प्रादुर्भाव प्राचीन काल में ही हो चुका था। महार्षि भरत ने 'नारय शास्त्र' में 'राग' शब्द का प्रयोग केवल रंजन के लिए किया था।

2.1.2 Definition (परिभाषा)

ध्वनि की व विशष्ट रचना जिसमें स्वर तथा वर्ण के कारण सौन्दर्य होता है जो मनुष्य के चित का रंजन करे अर्थात जो श्रोताओं के मन को प्रसन्न करे बुद्धिमान लोग उससे 'राग' कहते है।

राग की परिभाषा में कहा गया हैः–

स्वरर्वण विशेषणा ध्वनिभेदन वा पुनः

रज्यते येन यः कश्चित् स रागः

समतः सताम्ः

अर्थात गान क्रिया से अथवा ध्वनि भेद के द्वारा जो जनरंजन में समर्थ है, वह राग है सारे शास्त्रीय संगीत का भवन राग रूपी नीव पर ही खड़ा है।

Rules Governing the structure of Ragas are:-

राग के नियम :– (1) राग किसी थाट से उत्पन्न होना चाहिए।

(2) ध्वनि की एक विशेष रचना हो।

(3) राग में स्वर तथा वर्णा हो।

(4) रंजकता यानि सुन्दरता हो।

(5) राग में कम से कम 5 स्वर अवश्य होने चाहिए।

(6) राग में आरोह अवरोह होना बड़ा अनिवार्य है। क्योंकि इनके भिन्न राग का रूप पहचानना नहीं जा सकता।

(7) किसी भी राग में षड़ज से स्वर वर्जित नहीं होता।

(8) मध्यम तथा पंचम यह दो स्वर एक साथ तथा एक ही समय कभी भी वर्जित नहीं होते।

(9) राग में वादी–सम्वादी स्वर अवश्यक रहते है। इन स्वनों पर ही विशेष ध्यान रहता है।

(ii) Short Term Definitions:-

2.1 (i) Aroha आरोह Ascent of Notes:-

2.1.1 Explanation of the term (व्याख्या)

Definition of Aroh परिभाषा

गाने बजाने की जो क्रिया है उसे वर्ण कहते है। वर्णा चार प्रकार के होते है जैसे 1. स्थायी, 2. आरोही, 3. अवरोही, 4. ओर संचारी वर्ण कहते है।

आरोह :– नीचे स्वर से ऊँचे स्वर तक चढ़ने या गाने बजाने की क्रिया को आरोह अर्थात आरोही वर्ण कहा जाता है। यानि सप्तक के स्वरों की सीढी पर चढ़ने को आरोह कहा जाता है।

Explantion of term:– (व्याख्या)

स्वरों का प्रयोग किस क्रम से होना चाहिए यह लक्षण आरोह अवरोह से ही पता चलता है। गीत बजाते समय गायक अथवा वादक किसी भी एक स्वर पर बहुत समय तक नहीं ठहरता, बल्कि उस स्वर से उपर नीचे चढता उतरता है। उदाहरणर्थः नि स ग म प नि सां स्वर का क्रम राग बिहाग के आरोह का है। कभी कभी हम देखते है कुछ रागों में स्वरों का उतार चढ़ाव स्पाट न होकर वक्र होता है। जैसे राग केदार का अरोह लीजियेः स म म प, ध प नि ध ा सं, इमसें ध प और नि ध अवरोहात्मक स्वर है।

2.1 (ii) Avroh (अवरोह) Descent of Notes:-

2.1.1 Explanation of term (व्याख्या)

अवरोहः– ऊँचे स्वर से नीचे स्वरों पर आने या गाने बजाने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

जैसेः– पउज स्वर से नीचे के स्वर गाने है या बजाने है तो सं नि ध प म ग रे स यह अवरोह हुआ। आरोह अवरोह गाते बजाते समय हम यह देखते है कि गायक अथवा वादक किसी भी स्वर पर अधिक देर तक नहीं ठहरता। बल्कि उस स्वर से उपर नीचे चढता–उतराता है। तार (सां) से मध्य (स) तक उतरते हुए स्वरों के क्रम को अवरोह कहा

जाता है। राग यमन के अवरोह के स्वर सं नि ध प मे ग रे म, कभी कभी हम यह देखते है कि कुछ राग में स्वरों का उत्तार चढ़ाव सपाट न होकर वक्र होता है अथवा कुछ स्वर वर्जित होते है, जैसे राग बिहाग का अवरोह है स नि ध प मे प ग म ग रे स इसमें मे प और ग म, स्वर आरोहात्मक है अर्थात वक्र है। ऐसी परिस्थित में अवरोह की परिभाषा इस प्रकार होगीः–

Definition (परिभाषा) ''राग की धलन के अनुसार तथा वर्जित स्वरों का ध्यान रखते हुए स्वरों के उतरते हुए क्रम को 'अवरोह' कहते है।

2.1. (iii) Pakad (पकड)

2.1.2 Definition of the term (परिभाषा)

यह छोटा सा छोटा स्वर समुदाय जिससे केवल एक राग का बोध हो राग की पकड कहलाती है। स्वयं पकड शब्द से यह साफ है कि जिससे किसी राग को पकड़ा जा सके। पकड कहलाता है।

Explanation of the term : (व्याख्या)

इस छोटे समुदाय को राग का मुख्य अंग भी कहा जा सकता है। गाते बजाते समय पकड का प्रयोग बार बार किया जाता है। प्रत्येक राग की पकड एक दूसरे से भिन्न होती है।

उदाहरण के लिए राग खमाज की पकड़ इस प्रकार है। नि् ध, प, ध, म, ग। पकड को राग विस्तार में बार बार लिया जाता है। रागों में पकड का एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

2.1 Vadi Swar (वादी स्वर)

2.1.2 Definition of the term (परिभाषा)

राग का पाँचवा लक्षण वादी सम्वादी कहलाता है। राग में एक ऐसा प्रबल स्वर है जिसका प्रयोग राग में अन्य स्वरों से अधिक होता है, तथा गायन वादन में इस स्वर का प्रयोग बार बार होता है। जिससे राग स्पष्ट होता है। ऐसे स्वर को राग का वादी स्वर कहकर पुकारा जाता है।

''वदति इति वादी'' अर्थात जिस स्वर में राग की परख होती है। इसका राजा की उपमा दी गई है।

Explanation of the term (व्याख्या)

राग की सत्ता को बनाए रखते है। वादी स्वर को राग का मुख्या वा जीव स्वर अशं स्वर, आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। उदहारण के लिए राग काफी का वादी स्वर पंचम है इसलिए इसमें पंचम स्वर का विशेष महत्व है।

Importance of Vadi Swar:-

महत्वः– जहां तक वादी स्वर के महत्व का अटूट सम्बंध इसका राग के समय का घनिष्ट सम्बध अर्थात संन्धि प्रकाश राग जैसेः– जिस राग का वादी स्वर सप्तक के पूर्वाड में अर्थातः– स रे ग मं या 'प' स्वरों में होता है। वे वादी राग अथवा पूर्व राग कहलाते है। इन रागों के गाने का समय 12 बजे दिन से 12 बजे रात तक होता है। इसी प्रकार जिन रागों के वादी स्वर सप्तक के उत्तराड अर्थात 'म' या 'प' ध नि सां स्वरों में होता है। वह उत्तरांड वादी राग अथवा उत्तर राग कहलाता है। इन रागों के गाने का समय रात के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक होता है।

2.1 Samvadi Swar (सम्वादी स्वर)

2.1.2 Definition of the term (परिभाषा)

जो स्वर राग में वादी स्वर की अपेक्षा कम तथा राग में लगने वाले अन्य स्वरों से अधिक प्रयोग किया जाता है उससे संवादी स्वर कहा जाता है।

Explanation of the term (व्याख्या)

वादी स्वर के सहायक को संवादी स्वर कहा जाता है। तभी तो शास्कारों ने इससे मंत्री की उपाधी दी है। वादी स्वर से चौथे या पाँचवे नम्बर पर संवादी स्वर होता है। राग के समय के सम्बन्ध में सूचित करता है। इन स्वरों में 9 या 13 श्रुतियों का अन्तर होता है। वादी–सम्वादी स्वर सदैव षडज–मध्यम तथा षउज–पंचम भाव से होता है। उदाहरण राग यमन में वादी 'ग' और 'नि' सवांदी है जो षउंज पंचम भाव से है।

2.1 Anuvadi Swar (अनुवादी स्वर)

Definition of the term (परिभाषा)

वादी सम्वादी के अतिनिक्त जो स्वर राग में लगते है वे अनुवादी कहलाते है।

Explanation of the term (व्याख्या)

राग कल्याण में वादी गाधार है तथा संम्वादी निषाद है, इनको स्वरों को छोड़कर बाकी स्वर कल्याण राग के अनुवादी स्वर है। अर्थात स रे ग म प ध स्वर कल्याण राग के अनुवादी स्वर है।

2.1 Vivadi Swar (विवादी स्वर)

Definition of the term (परिभाषा)

विवादी का वास्तविक अर्थ तो बिगाड पैदा करने वाला ही होता है अर्थात ऐसा स्वर जिससे राग का स्वरूप बिगड जावे इसलिए विवादी स्वर को शत्रु (बैरी) की उपमा शास्त्रों में दी गई है। इससे वर्जित स्वर भी कह सकते है।

Explanation of the term (व्याख्या)

अर्गचि विवादी स्वर को राग का शत्रु माना जाता है परन्तु इस स्वर का प्रयोग कभी कभी राग की शोभा को बठाने के लिए कुशलता पूर्वक किया जाता है। कुछ रागों में विवादी स्वरों ने महत्व पूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है। जैसे राग हमीर, केदार आदि में कोमल निषाद का प्रयोग बहुतायत से होता है। राग बिहाग में तीव्र म विवादी स्वर है। इनका प्रयोग अब इतना अधिक होने लगा है कि ये अनुवादी का स्थान ग्रहण कर रहे है। केवल कुशल गायक या वादक विवादी स्वर का प्रयोग कर सकते है।

अर्थात जब वह राग को गाते बजाते है तो श्रोतगण के हृदय मे एक अजूबा उत्पन्न करते है। जिससे श्रोतागण मन्त्रमुग्ध होते है।

2.1 Varjit Swar (वर्जित स्वर)

2.1.2 Definition of the term

(परिभाषा) :– जो स्वर राग का शत्रू माना जाता है। अतः जिससे राग का स्वरूप बिगड़ जाता है उससे वर्जित स्वर कहा जाता है।

Explanation of the term (व्याख्या)

राग भूपाली में 'भा' और नि स्वर वर्जित स्वर है। इस प्रकार राग खमाज के आरोह में 'रे' वर्जित है। वज्य स्वर और विवादी स्वर में अन्तर है। र्वज्य स्वर का प्रयोग राग में नहीं होता, किन्तु विवादी स्वर का प्रयोग राग की रजकता बठाने के लिए कभी कभी कर लिया जाता है।

Progress Exercise

1. Name the three Aspects of Music, also write them in order of preference as mentioned in Sangeet Ratnakar.
2. Define Nad (Also write two types of Nad)
3. Differentiate between 'Nad' and Shruti
4. Write down the brief definition of 'Raga' and 'Thata' and the basic difference between the two.
5. Write down the main difference between varjit swar and vivadi swar.

Books to be studied:-

1. Sangeet Shastra Darpan; published Sangeet Karyalaya Vol. I & II, Hatras (U.P)

2. Sangeet Visharad by Basant Pub. Ratnakar pathak - 27 Mahajani Tola Allahabad

   Rag Parichay Vol I & II by Prof. Harish Srivastava; Pub. Sangeet Sadan Prakashan Allahabad.

3. Biographical sketch of the following Musicians:-

   i) Pandit V.N. Bhattchandey.

   ii) Pandit V. D. Paluskar

Section B

(III) Pt. Vishnu Narayan Bhatkhandey Life Sketch

Date and Place of Birth:-

(i) पं॰ विष्णु नारायण मातखण्डे का जन्म 10 आगस्त स1 1860 ई॰ को बम्बई के बालकेश्वर नामक गाँव में कृष्ण जन्मअष्टमी के दिन हुआ।

(ii) आपके पिता माता संगीत के बड़े प्रेमी थे। आपके पिता कानून बनाया करते थे उन्हें अपने पिता से संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। माता एक योग्य वैधा तथा घरेलू चिकित्सा में प्रवीणा महिला थी। पंडित जी को बचपन से ही गाने में लगाव था। इन्होंने बाल्यवस्था में स्कूल आदि कई स्थानों से संगीत (गाने) में पारितोषिक प्राप्त किए। विद्यार्थी जीवन में बंसुरी भी बहुत अच्छा बजाने लगे थे।

इसी समय सितार सीखने का भी शोक हुआ। बम्बई के प्रमुख बीनकार श्री जीवन जी महाराज के शिष्य सेठ बल्लभ दास जी महाराज (सूर) से लगभग तीन वर्ष तक सितार सीखा।

Training in Music and Futelage (संगीतिक शिक्षणा) प॰ विष्णु नारायण मातखण्डे जी गुरूराव जी बुआ बोलबाथकर जयपूर के मुहम्मद अली खाँ, ग्वालियर के पंडित एकनाथ, रामपूर के कलवे अली खाँ आदि व्यक्तियों से गायन सीखा विद्यालय के विशेष अवसरों पर व गानागाकर पुरस्कार भी प्राप्त करते थे। साथ ही साथ स्कूल पठाई में भी आपने बाधा नहीं पड़ने दी। जब आप काले में पड़ते थे, तभी से आपने शास्त्रीय संगीत नियमित रूप से सीखना आरम्भ किया था। उनकी रूचि संगीत से थी और वे संगीत जगत में ही रहना चाहते थे।

Individuality (व्यक्तित्व)

Academic Carrier

सन् 1883 ई॰ में बी.ए. और 1890 ई॰ में एल.एल.बी (वकालत) परीक्षाये पास कर ली। किन्तु आर्थिक व्यवस्था ठीक न होने के कारण बम्बई के एलफिस्टन हाई स्कूल में अध्यापक हो गये। वकालत पास करने के उपरान्त सन 1890 में कराची जाकर वकालत शुरू कर दी। फिर से कुछ दिन बम्बई आकर वकालत प्रारम्भ कर दी।

Urge for Research :– पं॰ जी ने देश विभिन्न भागों में भ्रमण किया और संगीत के प्राचीन ग्रंथों की खोज की। भ्रमण में जहा भी कोई संगीत विद्वान का पता चला उससे मिलने लगे।

जो कुछ भी ज्ञान धन देकर सेवा कर अथवा शिष्य बनकर भी प्राप्त हो सका उन्होंने निसंकोच प्राप्त किया। कही कही तो उन्हें बहुत दिक्कते भी उठानी पड़ी। आपने सर्व प्रथम श्री राव जी बेल बाथकर से संगीत प्रारम्भ किया। इनसे आपको स्वरलिपि (नोटेशन) का कुछ भी ज्ञान ना हुआ। इसके लिए आपने अहमदाबाद, जूनगठ, जामनगर,, बरोच, सूरत, बडोदा आदि स्थानों का भ्रमण किया। साथ ही साथ बड़े बड़े पुस्तकालयों आदि से अनेकों संगीत सम्बन्धी पुस्तकों की छानबीन की।

इस प्रकार मातखण्डे जी जीवन पर्यन्त संगीत की अथक सेवा करते रहे। और 19 सितम्बर 1936 को उनका देहान्ता हो गया। वास्तव में विष्णु दिगम्बर और मातखंण्डे एक दूसरे के पूरक थे। संगीत के साथ यह दोनों विभूतियो भी अमर रहेगी। ग्वालियर और बडोदा सरकार ने आर्थिक योग में विशेष साइपता की। इस तरग गणेश चतुदशी के दिन आप परलोक सिद्वारे। आपका नाम व काम संगीत जगत में हमेशा अमर रहेगा।

Section B

iii) Pt. (Vishnu Digambar Paluskar)

1. Life Sketch

2. Date and Place of Birth :-

i) आपका जन्म सन् 1872 ई॰ में 18 अगस्त श्रावण पूर्णिमा के दिन रियासत कुरूदवाड जिला बेलगांव में 8 बजे रात को हुआ था।

ii) **Family Background –** वि.डी. पुलस्कर जी के पिता का नाम दिगम्बर गोपाल और माता का नाम गंगा देवी था। पिता एक अच्छे कीर्तनकार थे और यह उनका वशं परंपरागत व्यवसाय था। और उन्होंने पंडित जी को अंग्रेजी शिक्षा दिलाना आरम्भ किया। बाल्यवस्था की चपलता के कारण आतशबाजी खेलते समस आँखे कुछ खराब हो गई थी। जिसके कारण इन्हें पढाई का कार्य बन्द कर देना पड़ा। (स्थागित कर देना पड़ा) आँख के बिना कोई उचित धंधा न मिलने के कारण विवश होकर आपके पिता ने आपको संगीत सिखाने का सोचा। इनको अभिरूचि संगीत सीखने की और बढने लगी। आपने 15 वर्ष की अवस्था से संगीत सीखना प्रारम्भ किया।

(iii) Training in Music and tutelage:- (संगीतिक शिक्षण)

पं॰ विष्णु दिगम्बर जी को मिरज के पंडित बालकृष्ण बुआ इचलकरजीकर के पास संगीत शिक्षा के लिए भेज दिया। मिरज रियासत के तत्कालीन महाराजा ने उनको प्रतिभा से प्रभावित होकर इन्हें राजाश्रय दे दिया और उनके लिए प्रत्येक प्रकार की व्यवस्था कर दी।

(iv) Individuality (व्यक्तित्व):–

एक बार मिरज में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गई और रियासत के सर्वत्र प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया प॰ विष्णु दिगम्बर जी को बलाया गया। किन्तु उनके गुरू जी को निमन्त्रित नहीं किया गया। प॰ जी ने इसका कारण जानना चाहा। पूछने पर उन्हें आर्श्चय जनक उत्तर मिला कि अरे वे तो गवैये है। उन्हें निमन्त्रित करने की क्या आवश्यकता। अपने पूज्य गुरू और गवैयों के विषय में वे सोचने लगे कि समाज में संगीतज्ञों की यह दयनी दशा। प॰ जी ने उसी क्षण संगीतज्ञों की दशा सुधारने व समाज में संगीत को उच्च स्थान प्राप्त करने तथा संगीतज्ञ का प्रचार व प्रसार का दृढ निश्चय किया। 15 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह श्रीमती रमा बाह के साथ हो गया। इनके बारह बच्चे हुए जिनमें अब एक भी जीवित नही है। कुछ वर्ष पूर्व इनके प्रतिभाशाली पुत्र जिनकी अवस्था 26 वर्ष की थी का भी देहान्त हो गया। इनका नाम प॰ दत्रात्रेय विष्णु पुलस्कर था। आप संगीत के क्षेत्र में एक सितारे की तरह चमक रहे थे और अपने सरस तथा मधुर संगीत से संगीत–प्रेमियों का मन मोह रहे थे।

Pt. V. Bhatkhanday

Progress Exercise:-

1. What was the date and place of birth of Pt. V. N. Bhathlanday.
2. How Pt. Ji could get interest in the field of Music.
3. From where Pt. Ji got initial training in music?
4. Who were the musicians responsible to shape Pt. Jee's style of singing.
5. What do you know about the academic carrier of Pt. Ji.

Pt. V. N. Bhatkhanday

Books / Reference to be consulted:-

1. Hamareee Sangeet Rattan by Laxmi Narayan Garg. Pub. By Sangeet Karyalaya Hathras (U.P.)
2. Sangeet Shastra Darpan Vol Ist by Smt. Shanti Goverdhan. Published by Pathak 27 Mahajani Tola (Allahabad).

3. Hindustani Music by Ashok D.A. RANDE Pub. by the Director National Book, trust India As. Green Park. New Delhi - 110016

4. Sangeet Nibandh Malla by Pathak Publication Allahabad.

5. Rag Parichay by Harish Chander Shrivastava Ji Vol II & III Allahabad.

Pt. V. D. Plusakar

Progress Exercises

i) What was the date and place of birth of Pt. Vishnu Dighmber Pulsakar.

2. What do you know about the family history of Pt. Paluskar.

3. From whom Pt. Paluskar got initial training in music.

4. In Pt. Paluskar time, much honour was not given to musicians, what was Pt. ji, reaction and what he determined to do.

5. In the words of Pt. Onkarnath thakur what is the peculiarity in the style of singing of Pt. Paluskar is.

6. What do you know about the travels of Pt. Paluskar and what was the trend of the people of these places about his styles of singing.

Books / References to be consulted:-

1. Hamare Sangeet Rattan by Laxmi Narayan Garg pub. by Sangeet Karyalaya Hatheas (U.P)

2. Sangeet Shastea Darpan by Smt. Shanti Goverdhan pub. by Ratnakar Pathak 27 Mahajani Tola Allahabad.

3. Sangeet Vishrat by Basant Pub. by Sangeet Karyalaya Hathras (U.P)

4. Sangeet Nibandh Malla Pub. Pathak Allahabad.

5. Sangeet Mani by Maharani Sharma Pub. Shree Bhunashowari Prakashan Allahabad.

Section -A

IV Writing of Definition of Ragas and Talas of the course of Study

Write Definition of Rag Yaman

Structure

1.0 Objective

1.1. Indenfitication of Raga

1.2 Frame work of selected Notes (Ground Plan)

i) Ascending order (Aroh)

ii) Descending order (Avroh)

iii) A phrase of Selected Notes (Pakad)

1.3 Distinctive features:-

(a) Rag Yaman (यमन)

1.1.1 Identification of Rag Yaman

दोहा :– सब ही तीवर सुरजंहा, वादी गन्धार–सुहाय

अरू संवाद निषाद तं, इमन राग कहलाया।

राग विवरणः– इस राग की उत्पत्ति अपने ही राग वाले थाट अर्थात कल्याण से मानी गई है। राग यमन में मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते है। आरोह अवरोह में सब यानि सतों स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिए इसकी जाति सम्पूर्ण सम्पूर्ण है।

1.2 Frame Work of selected notes (Ground Plan)

(i) Assending order (Aroh)

ii) आरोह :– नि़ रे ग, मे प ध नि सां

अथवा नि़ रे ग, मे प, मे ध नि सां

(iii) Descending order (Avroh)

अवरोह :– सं नि ध प, मे ग रे, नि़ रे स।

A phrase of selected notes (pakad)

पकड़:– नि़ रे ग, रे, प मे ग, नि़ रे ग रे, नि़ रे सा

1.3 Distinctive Features:-

विशेष विवरण:–

1. कल्याण राग में मध्यम तीव्र तथा सब स्वर लगते है। कल्याण प्राचीन नाम है। परन्तु मुस्लमानों के समय में इसे यमन या (इमन) कहर पुकारने लगे। कभी कभी इस राग में शुद्र मध्यम का प्रयोग करते है तब इससे यमन कल्याण कहकहर पुकारते है। इसमें शुद्ध म केवल अवरोह में दो गान्धारो के बीच प्रयोग किया जाता है। जैसे:– नि़ रे, ग मे प, प मे ग म गरे, नि़ रे सा।

2. करूणा इस की इस राग में प्रधानता है। गाधार स्वर वादी होने से यह पूर्वाअंग में आरोह करते हुए अधिकतर 'स' को टालकर एसे नि़रंग कहते है। तथा उतराग के स्वर कहते हुए 'प' स्वर को टालकर (वक रूप में) में ध नि सां इस प्रकार कहते है।

3. इस राग में नि, रे और प रे स्वर समुह बार बार प्रयोग किए जाते है। जैसे नि़ रे ग में प ऽ र ग रे नि़ रे स कुछ विद्वान इस राग के आरोह में प वर्जित करते है। इस प्रकार इसकी जाति पाडव सम्पूर्ण हो जाती है।

4. इस राग की प्रकृति गम्भी है। इसमें बड़ा अथवा छोटा ख्याल तराना घुपृद तथा मुमीत रवाना, राजखानी गते सामान्य रूप में गाह बजाह जाती है। इस राग का चलन तीनों सप्त को में होता है।

5. राग यमन के न्यास स्वर :– स, रे, ग, प और नि है।

6. कल्याण राग को आश्रय राग भी कहते है क्योंकि इस राग का जनक थाट कल्याण है।

7. सम–प्रकृति राग यमन –कल्याण है।

Section -A Indian Music

Writing detailed Definition of Ragas:-

Rag : Durga

Structure

1.0 Objective

1.1. Indentification of Raga

1.2 Frame work of selected Notes (Ground Plan)

i) Ascending order (Aroh)

ii) Descending order (Avroh)

iii) A phrase of Selected Notes (Pakad)

1.3 Distinctive features:-

1.4 Progress Exercise

1.5 Reference Books

Objective:-

After going through this topic the students should be able to :=

i) Know the identity of the Raga

ii) Know the melodic structure of the Raga (Tonality)

iii) Know the special features

2 Rag Durga (दुर्गा)

1.1.1 Identification of Rag Durga:-

दोहा :– याट बिलावल ग नि वर्जित औडव

औड़व जाति घ रे स्वर संवाद करत, जब गावत गुणि जन रात्रि।

राग विवरणः– इस राग की उत्पत्ति बिलावल याट से मानी गई है। इस राग में गं धार और निषाद स्वर का प्रयोग बिल्कुल ही नहीं होता। इसलिए इसकी जाति औडव औडव है यह बिलावल थाट का जन्य राग है। वादी स्वर मध्यम तथा संम्वादी स्वर षडज है। उतरांग प्रधान राग है। न्यास के स्वर स, रे, म, प है। गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर

1.2 Frame Work of selected notes (Ground Plan)

(i) Assending order (Aroh)

आरोह :– स रे म प ध सा

(ii) Descending order (Avroh)

अवरोह :– सं ध प म रे स रे ध सा

iii) A phrase of selected notes (pakad)

पकड़ः– रे म प ध, म रे, स रे, ध़ स

1.3 Distinctive Features:-

विशेष विवरणः–

हाँलाकि इस राग की वादी संवादी स्वर मल्यम और षउज है। परन्तु धैवत और निषभ स्वर इस राग के स्वरूप को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण है। प्राचीन ग्रन्थों में राग दुर्गा का गायन समय दोपहर था। और शायद तब इसका वादी स्वर धैवत रहा होगा। परन्तु आजकल चूकि इस राग का गायन वादन का समय रात्रि का दूसरा पहर मान्य है। इसलिए वादि स्वर मध्यम ही अधिक उचित है। दुर्गा नाम के एक राग की उत्पत्ति खामज याट से होती है और उसमें रिषम पंचम वर्जित है पर उसका स्वरूप इस दुर्गा राग से भिन्न होता है, दुर्गा से मिलता जुलता राग सोम का भी वर्णन मिलता है। पर प्रचार में यह राग नहीं है।

दक्षिण भारतीय संगीत के राग शुद्र सावेरी के स्वर भी वहीं है जो राग दुर्गा के है।

विशेष स्वरः– संगतियः–

1. म प ध, म ऽ रे, स रे घ़ स।
2. म प ध सां, ध, म रे ऽ प।
3. म रे ऽ प
4. रे म प ध म प ध, म रे, स रे ध़ स

Section -B

IV Definition of Talas from your course of study

ताल : भारतीय संगीत का प्राणा ताल है। इस संगीत में ताल परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। ताल लय को दशाने की क्रिया है। संगीत में विभिन्न स्वरों के बीच जेा अन्तराल होता है। उसका ताल काल क्रिया मानम नापने के लिए ताल की क्रिया आरम्भ होती है। हृदय की गति और नाड़ी का चलन इस लय तत्व का उदाहरण है। लय के जन्म के साथ ही उसको र्दशाने के लिए किसी क्रिया की आवश्यकता पड़ी और ताल का जन्म हुआ। ताल की उत्पत्ति के विष्य में डा॰ अरूण कुमार सेन का मत है कि साहित्य में छद का और संगीत में ताल का जन्म स्वभाविक रूप से हुआ होगा। प॰ दामोदर मिश्र ने संगीत र्दपण में ताल की उत्पत्ति के विषय में लिखा हैः–

शिव शक्ति समायोगात ताल इत्यमधीयेत

अर्थात शिव ने तांडव से ता और पार्वती जी ने लास्य से ल का स्मरण किया और इस प्रकार शिव तथा शक्ति के समायोज से 'ताल शब्द' बना।

संस्कृत ग्रथ संगीतारण्व के अनुसार ताण्डव नृत्य (पुरूष) से ता और स्त्री के लास्य से ल लेकर ताल बना।।

आचार्य शाडंगदेव ने 'संगीत रत्नाकर; में आधार या तल अर्थ वाले तल् धातु से ताल शब्द की उतपत्ति मानी है।

ताल (वाध) प्राचीन ग्रंथों में ताल नामक एक धन के वाध की र्चचा मिलती है। यह वाध छ अंगुल व्यास गोल कासें का बना होता है। इसके बीच में दो अंगुल गहरा होता है। तथा मध्य में दो छेद होते है। जिसमें एक डोरी द्वारा वह जुडा रहता है। इससे दोनो हाथ से पकड कर बजाया जाता है। यह मंजीरे से मिलता जुलता एवं उससे आकार में बड़ा एक लोक वाध है। ताल की ध्वनि तेज जैसे डरे हुए हाथियों के कान फड़फडाये तो तालों की आवाज दुगुनी हो गई।

तीन ताल :–

ताल परिचयः– तीन ताल को त्रिताल भी कहते है। यह उत्तर भारतीय संगीत का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित ताल है। यह ताल बहुत प्राचीन नहीं है। यवन काल में इस ताल का नाम 'रवमसा' ताल था। इस ताल के अनेक रूप भिन्न भिन्न नामों से प्रचार में है। और उन्हीं सभी का स्वरूप पूर्णतः तीन ताल के समान है।

उदाहरण के लिए :– तिलवाडा ताल, अदाताल, पंजाबी ताल तथा जत ताल का नाम लिया जा सकता है। तीन ताल मध्य दुत और अतिदुत लयों में बजाने के लिए अत्यन्त उपयुक्त ताल है। तबल पर सोलो वादन में इसका खूब प्रयोग होता है। अधिकतर मध्य लय की छोटे ख्याल की बंदिशे तथा सितार, सरोद तंत्र वाधों में मसीत खानी और रजाखानी गते तीन ताल में गाई बजाई जाती है। कथक नृत्य में भी तीन ताल का प्रमुख रूप से प्रयोग होता है। इस ताल में पेशकारा कायदा टुकडा, परन गत आदि सभी कुछ बजाया जाता है। इसका छन्द रूप 4/4/4/4 है।

एक तालः–

ताल परिचय

ख्याल गायकी के संग जन्मी, द्वादस मात्राओं का एक ताल।

एक पाँच नौ ग्यारह ताली और तीन ताल पर खाली तबले के इस मधुर ताल को सभी लोग पसन्द करते हैं। सभी लयों और गायन वादन में सभी प्रयोग करते स्वच्छन्द है । आधुनिक ख्याल गायकी के युग में विलम्बित लय में बजाया जाने वाला सबसे अधिक प्रचलित ताल एक ताल है। एक ताल और चौताल के स्वरूप और आघात में कोई अन्तर नहीं है। केवल ठेके बे बोलो में अन्तर है। एक ताल के नामकरण के बारे में कोई तर्क नहीं मिलता। स्वतंत्र वादन में भी इसका प्रयोग होता है। इस ताल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह प्रति विलम्बित लय से लेकर अति दुत लय तक बरर्पूबी बजाया जाता है। यह एक सम–पद ताल है। इस का छन्द–रूप 2/2/2/2/2/2 है। एक ताल में पेशकारा, कायदा, टुकडा, परन, आदि सभी कुछ बजाया जाता है।